



# बिहार गजट

## असाधारण अंक

### बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

23 आषाढ़ 1939 (श0)

(सं0 पटना 614) पटना, शुक्रवार, 14 जुलाई 2017

जल संसाधन विभाग

अधिसूचना

29 मई 2017

सं० 22/नि०सि०(वीर०)-07-16/2012-773—श्री जानकी प्रसाद घोष, तत० कार्यपालक अभियंता, पूर्वी तटबंध प्रमंडल, सुपौल सम्प्रति सेवानिवृत्त के विरुद्ध पूर्वी कोशी तटबंध के कि०मी० 0.00 से 123.77 कि०मी० में उच्चीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं उस विटुमिनस सड़क निर्माण कार्य में बरती गयी अनियमितता के निम्न आरोपों के लिए विभागीय संकल्प ज्ञापांक 569, दिनांक 14.05.13 द्वारा बिहार सरकारी सेवक (वर्गीकरण नियम एवं अपील) नियमावली 2005 के नियम 17 के तहत विभागीय कार्यवाही संचालित की गयी :-

(1) पूर्वी कोशी तटबंध के कि०मी० 0.00 से 123.77 कि०मी० उच्चीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं उस विटुमिनस सड़क निर्माण कार्य (एकरारनामा सं०-1SBD/2009-10) में चार प्रमंडल संलग्न है :-

(i) पूर्वी तटबंध प्रमंडल सं०-02, वीरपुर (0 से 40कि०मी०) (ii) पूर्वी तटबंध प्रमंडल, सुपौल (40 से 84कि०मी०) (iii) पूर्वी कोशी तटबंध प्रमंडल चंद्रायण (84 से 105कि०मी०) (iv) जल निस्सरण प्रमंडल कोपरिया (105 से 123.77कि०मी०)। एकरारनामा के अनुसार कार्य प्रारंभ की तिथि 05.11.09 एवं कार्य समाप्ति की तिथि 04.11.11 निर्धारित थी।

उपरोक्त कार्य में संलग्न कार्यपालक अभियंता को अधीक्षण अभियंता, पूर्वी कोशी तटबंध अंचल, सहरसा के पत्रांक-1173, दिनांक 07.10.10 से प्री-लेबल की प्रति एवं उसके आधार पर रूपांकित सेक्शन तक मिट्टी की मात्रा प्रतिवेदन करने का निर्देश दी गयी। पुनः आपसे अंचलीय कार्यालय के पत्रांक 100 दिनांक 17.01.2011 द्वारा इसकी माँग की गयी। अंचलीय कार्यालय से पुनः यह भी लिख गया कि अनुपालन नहीं करने की स्थिति में भविष्य में किसी प्रकार की जटिलता के लिए वे व्यक्तिगत रूप से दोषी माने जायेंगे। मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, वीरपुर द्वारा भी पत्रांक-585, दिनांक 04.03.11 से आपसे प्री-लेबल की प्रति अविलम्ब उपलब्ध कराने का निदेश दिया गया।

बार-बार आदेश/निर्देश देने के बावजूद भी आपके द्वारा बिना जगह-जगह Strip छोड़े मिट्टी कार्य लगभग समाप्ति के पश्चात आपके पत्रांक 1488, दिनांक 13.09.11 द्वारा मापीपुस्त पर अंकित प्री-लेबल की छायाप्रति समर्पित की जिसपर भी आपका हस्ताक्षर नहीं है।

इस प्रकार आपने विभागीय नियमों एवं उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना की है।

(2) आपके पत्रांक 1488, दिनांक 13.09.11 द्वारा समर्पित प्री-लेबल के आधार पर कार्यपालक अभियंता, पूर्वी तटबंध प्रमंडल सं०-02 वीरपुर एवं आपके कार्य क्षेत्र के मिलान बिन्दु पूर्वी कोशी तटबंध के 40कि०मी० पर T.B.M का

मिलान करने से Level में अत्यधिक अंतर पाई गयी। यह अंतर कार्यपालक अभियंता, सुपौल का कार्य की मात्रा को प्राक्कलित मात्रा से अत्यधिक वृद्धि की तरफ पाई गई।

अधीक्षण अभियंता, पूर्वी कोशी तटबंध, अंचल, सहरसा के पत्रांक 1117, दिनांक 16.09.11 द्वारा कई बिन्दुओं पर आपसे स्पष्टीकरण की मांग की गयी। इस पत्र में यह भी उल्लेखित है कि सारी समस्या प्री-लेवल की प्रति मिट्टी कार्य लगभग पूरा होने के बाद समर्पित करने एवं कार्य के समय पुनः इसकी जाँच नहीं करने के कारण हुई है। इस प्रकार आपके द्वारा जटिलता उत्पन्न कर दी गई।

(3) मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, वीरपुर ने अपने पत्रांक 120, दिनांक 13.01.12 द्वारा 40कि०मी० के पास में T.B.M के लेवल में फर्क पड़ने की जाँच हेतु एक समिति गठित की गई। समिति द्वारा मुख्य अभियंता, वीरपुर को प्रतिवेदन समर्पित की गई।

मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग के पत्रांक 694, दिनांक 15.03.12 द्वारा कमिटी के प्रतिवेदन के अनुरूप पूर्वी तटबंध के 40कि०मी० के कन्ट्री साइड में स्थित मंदिर के Top Slab के Level 60.341 मी० को T.B.M मानते हुए अधिकाई मिट्टी कार्य एवं भुगतान में सुधार एक सप्ताह के अंदर कराने का आदेश प्राप्त हुआ। इस पत्र की प्रति अधीक्षण अभियंता, पूर्वी कोशी तटबंध अंचल, सहरसा ने पत्रांक 297, दिनांक 16.03.12 से आपको आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित की गई।

मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, वीरपुर के पत्रांक-759, दिनांक 19.03.12 के आलोक में आपसे भी आदेश का अनुपालन करते हुए प्रतिवेदन शीघ्र उपलब्ध कराने के निर्देश अधीक्षण अभियंता, सहरसा के पत्रांक 313, दिनांक 19.03.12 द्वारा दी गयी।

मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, वीरपुर के पत्रांक 917, दिनांक 27.03.12 के आलोक में अधीक्षण अभियंता, सहरसा द्वारा पत्रांक 345, दिनांक 27.03.12 से लिखा गया कि मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, वीरपुर के पत्रांक 694, दिनांक 15.03.12 में दिये गये आदेश का अनुपालन की जाय ताकि प्रतिकूल कार्य करने की नौबत नहीं आये। अधीक्षण अभियंता, सहरसा ने पत्रांक 359, दिनांक 28.03.12 से पुनः आपको लिखा कि इसमें काफी विलंब हो चुका है और विलंब अवांछनीय है। आपके द्वारा टाल-मटोल कर निरर्थक समय व्यतीत करने के लिए आप दोषी प्रतीत होते हैं।

(4) उपरोक्त कंडिका 3 में उल्लेखित आदेश/निर्देश के बावजूद आपके द्वारा कार्रवाई नहीं करने पर अधीक्षण अभियंता, सहरसा द्वारा पत्रांक 437, दिनांक 12.04.12 से पुनः आपको आदेश अनुपालन करने हेतु लिखा गया एवं इसमें यह भी उल्लेखित किया गया कि इसे अंतिम स्मार समझा जाय। आपके द्वारा मुख्य अभियंता, वीरपुर के पत्रांक 694, दिनांक 15.03.12 द्वारा निर्गत आदेश को मई 2012 तक अनुपालन कर लेने का आश्वासन दिया गया। फलाफल शून्य रहने पर अधीक्षण अभियंता, सहरसा के पत्रांक 680, दिनांक 20.06.12 से अदयतन प्रतिवेदन की माँग की गई। इस प्रकार आपके द्वारा आदेश का अनुपालन नहीं कर उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना की गई।

(5) दिनांक 21.06.12 को पटना में हुई विभागीय बैठक में पूर्वी तटबंध के उच्चीकरण, सुदृढीकरण एवं उस बिटुमिनस सड़क निर्माण कार्य का पुनरीक्षित प्राक्कलन तैयार करने का निर्देश प्राप्त हुआ। इस बैठक में आप भी उपस्थित थे। इस बैठक में आपको निर्देश प्राप्त हुआ कि मुख्य अभियंता द्वारा T.B.M के ही आधार पर मिट्टी की मात्रा की गणना की जाय।

आपके द्वारा उक्त आदेश का अनुपालन नहीं कर अपने T.B.M को सही ठहराते हुए और उसके आधार पर केवल अपने क्षेत्र का 218.40 करोड रुपये का पुनरीक्षित प्राक्कलन जिसमें अत्यधिक मिट्टी की मात्रा एवं एकरारनामा/प्राक्कलन में प्राक्धान के अतिरिक्त कई अनावश्यक प्राक्धान कर गलत प्राक्कलन तैयार की गई। अधीक्षण अभियंता, सहरसा द्वारा पत्रांक 751, दिनांक 02.07.12 से इसमें सुधार हेतु निर्देशित किया गया। कार्यपालक अभियंता, वीरपुर-2 जिन्हें पुनरीक्षित प्राक्कलन compile करना है वे भी आप को उच्चाधिकारियों के निर्देशानुसार प्राक्कलन में सुधार करने हेतु वापस की गई।

आपने पत्रांक 973, दिनांक 07.07.12 से अधीक्षण अभियंता, सहरसा को एवं पत्रांक 1171, दिनांक 01.08.12 से कार्यपालक अभियंता, पूर्वी तटबंध प्रमंडल सं०-2, वीरपुर को गलत प्राक्कलन को ही सही ठहराकर हट्टीपन एवं उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना की है। आपके द्वारा सही प्राक्कलन तैयार नहीं करने के कारण पुनरीक्षित प्राक्कलन का कार्य बाधित है, साथ ही आपके द्वारा उपरोक्त दोनों पत्रों में अनेक अमर्यादित वाक्य उल्लेखित कर आपके द्वारा अनुशासनहीनता का परिचय दिया गया है।

विभागीय कार्यवाही के संचालन के दरम्यान दिनांक 31.01.2014 को इनके सेवानिवृत्त हो जाने के फलस्वरूप इनके विरुद्ध संचालित विभागीय कार्यवाही को विभागीय आदेश सं०-91 ज्ञापांक 1146, दिनांक 22.08.14 द्वारा बिहार पेंशन नियमावली के नियम 43(बी) में सम्परिवर्तित किया गया।

संचालन पदाधिकारी से प्राप्त जाँच प्रतिवेदन की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गयी। समीक्षोपरांत संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से असहमत होते हुए निम्न बिन्दुओं पर विभागीय पत्रांक 1314, दिनांक 11.09.14 द्वारा इनसे द्वितीय कारण पृच्छा की गयी :-

(1) मिट्टी कार्यों में यह प्राक्धान है कि प्री-लेवल की जाँच गुण नियंत्रण प्रमंडल के टीम के साथ करके उसकी पुस्तिका मिट्टी कार्य कराने के पूर्व करा लिया जाय। ताकि मिट्टी कार्य होने के उपरांत प्री-लेवल से छेड़छाड़ न हो सके और सही मात्रा का भुगतान हो सके। आपके द्वारा अंकित किया गया है कि आपके पूर्व के कार्यपालक

अभियंता द्वारा इसे हस्ताक्षरित नहीं किया गया था, अतएव जमा नहीं किया जा सका। इसमें मिट्टी कार्य में अधिकाई भुगतान की संभावना प्रतीत होती है।

(2) आपके द्वारा बेंच मार्क के आधार पर अधिकाई मात्रा/भुगतान के संबंध में कार्य नहीं करने के आधार उड़नदस्ता जाँच को बनाया गया है जबकि यह आवश्यक था कि उच्चाधिकारियों के आदेश के अनुपालन में यदि अधिकाई भुगतान प्रतिवेदित होता है तो इसे तत्काल सुनिश्चित किया जाना चाहिए और अगले विपत्र से इसका समायोजन होना चाहिए। अन्यथा संवेदक से अधिकाई भुगतान की वसूली पी0डी0आर एक्ट के तहत करना होता है जो एक दुरुह कार्य है। अतएव आपके द्वारा उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना किया जाना प्रमाणित होता है।

(3) आपके प्रतिवेदन में अंकित है कि बेंच मार्क अभी भी विवादित है। परंतु उड़नदस्ता अंचल द्वारा जाँचोपरांत जो मुख्य अभियंता ने बेंच मार्क निर्धारित किया था और जिस आधार पर अधिकाई मिट्टी कार्य/भुगतान की वसूली की जानी थी वहीं बेंच मार्क सही पाया गया है और अब विवादित नहीं रह गया है। उड़नदस्ता के जाँच के आधार पर पूर्वी कोशी तटबंध के कार्य में मिट्टी कार्य/भुगतान का समायोजन/वसूली संबंधित प्रमंडल द्वारा किया गया है अथवा नहीं यह स्पष्ट नहीं है।

श्री घोष द्वारा द्वितीय कारण पृच्छा का जवाब दिया गया जिनमें मुख्य रूप से निम्न बातें अंकित की गई हैं:—

(1) दिनांक 21.06.10 को कार्यभार ग्रहण के पूर्व ही दिनांक 10.12.09 से 08.02.10 तक पूर्वी तटबंध के कि0मी0 40 से 84 तक प्री-लेवल ले लिया गया था जो कार्यपालक अभियंता गुण नियंत्रण प्रमंडल, वीरपुर द्वारा जाँचित एवं तत्कालीन कार्यपालक अभियंता द्वारा हस्ताक्षरित है। उक्त लेवल बुक पत्रांक 2029, दिनांक 17.12.11 द्वारा मुख्य अभियंता, वीरपुर को समर्पित है। अतः लेवल में छेड़छाड़ की कोई संभावना नहीं बनती है। सिर्फ प्री-लेवल का एम0बी0 जो अहस्ताक्षरित है को जमा करने की बात मेरे द्वारा अंकित की गई है।

स्वीकृत DPR प्राक्कलन में 40-84 कि0मी0 के बीच कुल प्राक्कलित मात्रा 49.8334 लाख घन मी0 के विरुद्ध 54.29 लाख घन मी0 मिट्टी की मात्रा का ही भुगतान किया गया जो 8.97 प्रतिशत अधिक होने के कारण कार्यपालक अभियंता के सक्षमता के अधीन है। अतः मिट्टी कार्य में अधिकाई भुगतान नहीं हुई।

(2) मुख्य अभियंता, वीरपुर के पत्रांक-694 दिनांक 15.03.12 पत्रांक-759, दिनांक 19.03.12 एवं अधीक्षण अभियंता सहरसा का पत्रांक-297, दिनांक 16.03.12 पत्रांक 313, दिनांक 19.03.12 के द्वारा तथाकथित अधिकाई कार्य/भुगतान से वांछित सुधार करने का निर्देश प्राप्त हुआ, अपने पत्रांक 415, दिनांक 28.03.12 एवं पत्रांक 455, दिनांक 02.04.12 से निर्देश के आलोक में कथित अधिकाई कार्य/भुगतान में वांछित सुधार करने का निदेश संबंधित अवर प्रमंडल पदाधिकारियों को दिया।

इस संबंध में मुख्य अभियंता, वीरपुर का पत्रांक 3790, दिनांक 28.11.12 एवं अधीक्षण अभियंता, सहरसा का पत्रांक-1307, दिनांक 29.11.12 द्वारा निदेशित किया गया कि मिट्टी कार्य एवं अधिकाई भुगतान का मामला उड़नदस्ता जाँच के क्रम में है। जाँच फल प्राप्त होने तक प्राक्कलित मात्रा तक भुगतान सीमित रखा जाय। अतः स्पष्ट है कि मेरे तरफ से उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना नहीं की गई।

(3) विभागीय पत्रांक 1364, दिनांक 22.06.13 एवं मुख्य अभियंता का पत्रांक 2020, दिनांक 24.06.13 के अनुपालन में उड़नदस्ता द्वारा जाँचित लेवल के आधार पर तटबंध के कि0मी0 40-84 के बीच मिट्टी कार्य/भुगतान का समायोजन/वसूली से संबंधित अपने पत्रांक 44 दिनांक 09.01.14 अधीक्षण अभियंता को समर्पित है जिसमें अधिकाई कार्य/वसूली को मामला नहीं बनता है। इससे संबंधित प्रतिवेदन वर्तमान कार्यपालक अभियंता के पत्रांक 905, दिनांक 16.09.14 से अधीक्षण अभियंता, सहरसा को समर्पित है जिसमें नया लेवल के आधार पर मिट्टी की गणना में कोई विचलन दृष्टिगोचर नहीं होने का उल्लेख है। अंत में तीनों आरोपों से मुक्त करने का अनुरोध किया गया है।

श्री घोष से प्राप्त द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गई। समीक्षा में मुख्य रूप से निम्न का उल्लेख किया गया —

(1) आरोपी श्री घोष द्वारा उपलब्ध कराये गये प्री-लेवल पुस्तिका से माह दिसम्बर 2009 से फरवरी 2010 के बीच प्री-लेवल लिये जाने असम्बद्ध गुण नियंत्रण प्रमंडल तथा सम्बद्ध तत0 कार्यपालक अभियंता से जाँचित होने की पुष्टि होती है। श्री घोष का कहना है कि पत्रांक 2029 दिनांक 17.12.11 से प्री-लेवल पुस्तिका मुख्य अभियंता को उपलब्ध करा दी गयी है।

श्री घोष द्वारा हस्ताक्षरित प्री-लेवल पुस्तिका रहने के बावजूद सम्बद्ध तत0 का0 अ0 से अहस्ताक्षरित प्री-लेवल मापीपुस्त में अधीक्षण अभियंता, सहरसा को पत्रांक 1488, दिनांक 13.09.11 द्वारा लगभग मिट्टी कार्य समाप्त होने के उपरांत उपलब्ध कराया गया। जिसके क्रम में प्रमंडल एवं अवर प्रमंडल के मिलना बिन्दु पर प्री-लेवल में अंतर जो प्रमंडल, सुपौल अंतर्गत मिट्टी की मात्रा की वृद्धि के तरफ है होने का उल्लेख अधीक्षण अभियंता के पत्रांक 1117 दिनांक 16.09.2011 में किया गया है। जिसमें अधिकाई मिट्टी का भुगतान होना परिलक्षित होता है। उक्त स्थिति श्री घोष द्वारा प्री-लेवल पुस्तिका (मापीपुस्त) निदेश के बावजूद उपलब्ध नहीं कराये जाने के कारण होना परिलक्षित करता है।

(2) मिट्टी कार्य में अधिकाई कार्य/भुगतान के सुधार के संबंध में मुख्य अभियंता, वीरपुर द्वारा दोनों प्रमंडलों के मिलान बिन्दु के नजदीक स्थित मंदिर के Deck Slab पर T.B.M का लेवल निर्धारित करते हुए तथाकथित अधिकाई कार्य/भुगतान में वांछित सुधार करने का निदेश दिया गया।

आरोपी श्री घोष का कहना है कि अपने पत्रांक 415, दिनांक 28.03.12 एवं पत्रांक 455, दिनांक 02.04.12 से संबंधित अवर प्रमंडल को निदेशित किया। उक्त से स्पष्ट होता है कि श्री घोष द्वारा मामले को गंभीरता से नहीं लिया गया, जबकि इसको संज्ञान में गंभीरता से लेते हुए मामले को निष्पादित कराते हुए आवश्यकानुसार संवेदक के विपत्र से समायोजन किया जाता तो संवेदक से वसूली की स्थिति उत्पन्न न होता।

इस प्रकार श्री घोष द्वारा उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना किया जाना परिलक्षित होता है।

(3) मुख्य अभियंता, वीरपुर द्वारा निर्धारित वेंच मार्क के आधार पर अधिकाई कार्य/भुगतान को सुधार करने के संदर्भ में श्री घोष का कहना है कि मुख्य अभियंता के पत्रांक 2020 दिनांक 24.06.13 के अनुपालन में उनके पत्रांक 44, दिनांक 09.01.14 से अधीक्षण अभियंता को समर्पित है। जिसमें अधिकाई कार्य/भुगतान/वसूली का मामला नहीं बनता है।

श्री घोष का उपरोक्त कथन विश्वसनीय प्रतीत नहीं होता है क्योंकि प्रस्तुत मामले में T.B.M के लेवल के अंतर के कारण उत्पन्न जटिल स्थिति में पूर्व में गठित समितियों द्वारा अधिकाई कार्य/भुगतान/वसूली की स्थिति स्पष्ट नहीं किये जाने के कारण अधीक्षण अभियंता, उड़नदस्ता अंचल, पटना मुख्य अभियंता, वीरपुर एवं अभियंता प्रमुख (उत्तर) की एक समिति अधिकाई कार्य/भुगतान की गणना हेतु गठित की गयी है। समिति से प्रतिवेदन प्राप्त होने के उपरांत दी अधिकाई कार्य/भुगतान की स्थिति स्पष्ट हो सकती है।

इस प्रकार प्री-लेवल पंजी/मापीपुस्त को उपलब्ध कराने में अनावश्यक विलंब करते हुए जान-बूझ कर सोची समझी साजिश के तहत मामला को जटिल एवं संदेहास्पद बनाया जाना परिलक्षित होता है।

उक्त परिप्रेक्ष्य में श्री घोष, आरोपित पदाधिकारी को ससमय उच्चाधिकारियों के द्वारा दिये गये निदेश का अनुपालन नहीं करने, जानबूझ कर मामले को जटिल बनाने T.B.M में पाये गये अंतर के अनुरूप कार्य की मात्रा में सुधारोपरांत अग्रेतर कार्रवाई नहीं करने के लिए दोषी माना जा सकता है।

वर्णित स्थिति में प्रमाणित आरोपों के लिए श्री जानकी प्रसाद घोष, तत0 कार्यपालक अभियंता सम्प्रति सेवानिवृत्त के विरुद्ध निम्न दंड देने का निर्णय लिया गया :-

(1) पेंशन से पाँच प्रतिशत की कटौती एक वर्ष के लिए।

उक्त प्रस्ताव पर बिहार लोक सेवा आयोग, पटना का सहमति प्राप्त है।

अतः श्री जानकी प्रसाद घोष, तत0 कार्यपालक अभियंता सम्प्रति सेवानिवृत्त को निम्न दंड दिया एवं संसूचित किया जाता है :-

(1) पेंशन से पाँच प्रतिशत की कटौती एक वर्ष के लिए।

बिहार-राज्यपाल के आदेश से,  
राकेश मोहन,  
सरकार के संयुक्त सचिव।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,  
बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित,  
बिहार गजट (असाधारण) 614-571+10-डी0टी0पी0।  
Website: <http://egazette.bih.nic.in>